: द्वितीय अध्याय :

: द्वितीय अध्याय :

कमलेश्वर के उपन्यासों का सामान्य परिचय

कमलेश्वर आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में एक सफलतम कहानीकार के रूप में जाने गये। कमलेश्वरजी का उपन्यास साहित्य भी अत्यंत समृद्ध रहा है। उन्होंने लगभग दस उपन्यास लिखे हैं। यह बात साफ जाहिर है कि एक फिल्मी, दिग्दर्शक, एडिटर, संवाद लेखक होने के नाते उनके उपन्यासों में फिल्मों के लिए उचित कथानक ही अधिक दिखाई देता है। जिनमें से अबतक चार उपन्यासों पर सफल रूप में फिल्में बन भी चूकी है। कमलेश्वर के निम्मलिखित उपन्यास पाये जाते हैं -

1) एक सड़क सत्तावन गलियाँ (सन् 1961 ई.)
2) डाक बंगला (सन् 1962 ई.)
3) लौटे हुए मुसाफिर (सन् 1963 ई.)
4) तीसरा आदमी (सन् 1964 ई.)
5) काली आँधी (सन् 1974 ई.)
6) अगामी अतीत (सन् 1976 ई.)
7) वही बात (सन् 1980 ई.)
8) सुबह-दोपहर-शाम (सन् 1982 ई.)
9) रेगिस्तान (सन् 1988 ई.)
10) समुद्र में खोया हुआ आदमी (सन् 1992 ई.)

कमलेश्वरजी ने इतना बृहत उपन्यास साहित्य लिखा है परंतु उनके सिर्फ कुछ ही कृतियों को जाना जाता है। उनका प्रथम उपन्यास `बदनाम गली' इस गलत नाम से प्रकाशित हुआ। उसे इसी नाम से

फिल्माये जाने के कारण उसे सभी जानते है। उनके सभी उपन्यासों की विशेषता यही है कि उनके उपन्यासों में कहीं-न-कहीं उनकी अपनी भुमि मैनपूरी साफ झलकती है। अत: हम यह कह सकते हैं कि जैसे कोई साहित्यकार अपने साहित्य सृजन के लिए अपने परिवेश से ही सामग्री ले लेता है, कमलेश्वर भी इस बात के लिए अपवाद नहीं है। उनके उपन्यासों को हम लघु उपन्यासों की कोटि मेंरख सकते है। क्योंकि उनके उपन्यास बृहत् आकारवाले नहीं है और कमलेश्वर मुल्त: एक कहानीकार है।

हिंदी साहित्य में कमलेश्वर का उदय 1950 के बाद माना जाता है। कमलेश्वर पहले एक चिंतनशील व्यक्ति है और फिर साहित्यकार है। प्रगतिशील विचारों काप्रभाव उनके साहित्यपर देखने को मिलता है। उन्होंने सामान्य आदमी, उसके जीवन का संघर्ष और उसके जीवन की विसंगतियाँ आदि का चित्रण अपने उपन्यास साहित्य में किया है। उनके द्वारा भोगे हुए यथार्थ का चित्रण भी उन्होंने अत्यंत प्रभावशाली रूप में किया है। उनकी विचारधारा पर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के संघर्षों का उनके मानसिक अंतर्द्वन्द्व का गहरा प्रभाव है। उनकी रचनाओं में भारत के आम आदमी की जिंदगी है। उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया है। उनकी कृतियों में एक ओर आम आदमी के दैनिक जीवन के मसले जैसे रोजी-रोटी मजदूरी है तो दूसरी ओर आस्था, आनास्था, प्रेम कलह आदि यथार्थ में चित्रित हुई है। कमलेश्वर ने जो कुछ भी कहा वह भी अत्यंत साफ-साफ रूप में कहा इसी वजह से उन्हें जीवन को खुली आँखों से देखनेवाला हरफन मौला कहा जाता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में कुण्ठाग्रस्त परिस्थितियों, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों तथा यौन की विकृतियों का उलझाव उत्पन्न नहीं किया। उन्होंने कस्बाई जीवन का अत्यंत सटीक और सच्चा चित्रण किया है। कमलेश्वरजी के अन्य साहित्य की तुलना में चाहे उनके उपन्यास कम महत्वपूर्ण रहे हो, फिर भी उनके उपन्यास कथानक की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं है; ऐसा नहीं कहा जा सकता। उनके उपन्यासों का कथानक निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है।

एक सड़क सत्तावन गलियाँ (सन् 1961 ई.)

'बदनाम गली' नाम से प्रकाशित कमलेश्वर का प्रथम लघु उपन्यास है। इस अकेले लघु उपन्यास ने ही कमलेश्वर को प्रतिष्ठित रचनाकार बना दिया। सन् 1961 में प्रकाशित इस उपन्यास के लगभग सव्वा सौ पृष्ठ है। इस उपन्यास में मैनपूरी कस्बे की कहानी है। इस कस्बे के जीवन को अत्यंत संवेदनात्मक अभिव्यक्ति इस उपन्यास में मिली है। इसका कथानक अत्यंत लघू होते हुए भी इसमें अत्याधिक गहराई दिखाई देती है। इसमें पात्रों की संख्या अधिक दिखाई देती है, फिर भी इसमें कोई नायक नहीं है। सरनाम सिंह, रंगीले और शिवराज ये तीनों खण्डित व्यक्तित्व को लिए हुए हैं। नायिका के पद की भी यहीं स्थिति है। बंसी, हेम और कमला तीनों ही नायिका के समान ही लगती हैं।

इस उपन्यास की कथावस्तु का आरंभ स्वाधिनता से पहले होता है तो अंत स्वतंत्रता के पश्चात् हुआ। इस देश को स्वतंत्र करने के लिए कितने न्मि और मध्य वर्ग के लोगों ने लड़ाई लड़ी थी। स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् उनका स्वप्न भंग हो गया। कमलेश्वर ने सरनाम और बंसी इन दोनों के चरित्र को बड़ी ही सहजता के साथ अंकित किया है। उपर से ये दोनों ही बड़े कठोर है परंतु भीतर ही भीतर फुलों से कोमल है। बंसी सरनाम को चाहती तो है परंतु वह उसपर झुठा आरोप लगाकर उसे घर से निकालती है। सरनाम बंसिरी से स्नेह करता है पर उसके स्नेह में कहीं-कहीं घृणा दिखाई देती है, परंतु उसके ह्रदय में होनेवाले स्नेह के कारण ही वह उसपर विश्वास कर वह पुलिस से बचने के लिए उसी का आश्रय लेता है। बंसिरी उसे घर से निकालती है जिसके परिणाम स्वरूप वह पकड़ा जाता है। रंगीले झुठी गवाही देने के आरोप में जेल जाता है और सरनाम वापस आता है। वह वापस आते ही बंसिरी को उसके घर छोड़ देता है और कभी-भी जरूरत पर मदद कर देने की इच्छा प्रकट करता है। बंसिरी को तब पश्चाताप होता है कि उसने इस प्रकार झुठा इल्जाम क्यों लगाया ? सरनाम उसे घर छोड़कर वापस चला जाता है। इस उपन्यास में आजादी से पहले मास्टर हबीब, संपादक निर्मोही तथा बाजा मास्टर जैसे हजारों व्यक्तियों के द्वारा देखे सपने आजादी के बाद टुट गये दिखाई देते हैं।

यह कथा चाहे लेखक ने सिर्फ मैनपूरी के संदर्भ में लिखी क्यों न हो फिर भी यह किसी भी

शहर का कस्बा हो सकता है, इसके पात्र भी किसी भी कस्बे के हो सकते हैं। बंसिरी पर आरंभ से जो बीती है, वह अन्य किसी भी भारतीय युवती पर बीत सकती हैं। लेखक ने अपने अनुभव तथा संवेदनशील अनुभूतियों के आधार पर इस उपन्यास की कथा लिखी है। इसमें नाम चाहे मैनपूरी के हो परंतु किसी भी उत्तरी भारत के भाग का प्रतिनिधित्व करनेवाली कथा है। इस उपन्यास के कथानक के सन्दर्भ में डा. अमर जायसवाल ने लिखा है ``सामाजिक चिंतन के साथ-साथ इसमें कोमल कठोर भावों का सुंदर अंकन हुआ है, क्योंकि लेखक की दृष्टि ही व्यापक और सरल है इसका कथ्य एकदम नया है जो कथा को अनुकूल रूप में प्रस्तुत कर सका है।``[1]

यह रचना चाहे विवरणात्मक शैली में क्यों न लिखी गयी हो, फिर भी उसका शिल्प और गठन बड़ा ही प्रभावी हुआ है। भाषा की दृष्टि से भी यह उपन्यास समर्थ है। भाषा इतनी प्रभावशाली है कि उसका मानो एक चित्र ही हमारे सामने प्रकट हो जाता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि कमलेश्वर के द्वारा किया गया यह प्रथम प्रयास ही उनकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में साबित हुई है।

डाक बंगला

सन् 1962 में लिखा गया `डाक बंगला` यह उपन्यास पूर्वदीप्ति शैली में लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में `इरा` नामक युवती की कहानी वर्णित है। इसने अपने जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव देखे, अच्छे और बुरे से होकर गुजरी, हर हारती-जीतती वह आगे बढ़ी है। उसके जीवन में चार पुरुष आते है विमल, बतरा, बुढ़ा डाक्टर और मेजर सोलंकी। फिर भी विमल के लिए ही वह तरसती रहती है, जो उसका सबसे पहला प्रेमी है और जिसने उसे धोखा दिया है। काश्मीर यात्रा के दौरान वह अपने एक सहयात्री तथा अंतरंग मित्र तिलक को अपने अतीत में डुबो देती है। मेजर सोलंखी के बारे में वह नहीं बता पाती जिसे बाद में स्वंय लेखक ने उसे अपनी ओर से बताया है। इस अपने आप को एक डाक बंगले की तरह मानने लगती है जिसमें आकर लोग कुछ समय के लिए रहते हैं और फिर उसे छोड़कर चले जाते हैं। वह बताती है कि उसका अपना पडाव कहीं नहीं हैं।

इरा तिलक को बताती है कि विमल उसे समझ न पाया और छोड़कर चला गया। बतरा ने सिर्फ

व्यवसायिक दृष्टि से उसे अपनाया और डाक्टर ही एक अकेला व्यक्ति ऐसा था जिसे वह चाहती नहीं थी फिर भी डाक्टर उसका पूजारी बनकर रहा और उसके नाम पंद्रह हजार की रकम छोड़ गया। वह मन की शांती की तलाश में भटक रही है। उपन्यास के अंत तक आते-आते तिलक उसे स्विकार करने की बात करता है परंतु वह साफ इन्कार करती है। वह जानती है कि चाहे पुरुष कैसा भी क्यों न हो वह स्त्री से चारित्र्य संपन्नता की अपेक्षा रखता है। वह चाहता है कि उसके जीवन का वह पहला आदमी हो। डा.पारूकांत देसाई लिखते हैं -

``मध्यवर्गीय समाज की विडम्बना और विसंगतियों का तथा हमारे उच्च समाज के खोखलेपन का अच्छा खाका लेखक ने खींचा है। दुखों ने इरा को दार्शनिक बना दिया है। अत: उसका प्रत्येक वाक्य कोई सुक्ति जान पड़ता है।``[2]

आदमी के प्यार की प्यासी इरा को कभी-भी आदमी भयस्सर नहीं हुआ अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए एक सुशिक्षित युवक को किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है, इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण करनेवाला यह उपन्यास कमलेश्वर की श्रेष्ठतम कृतियों में पहचाना जाता है।

लौटे हुए मुसाफिर

देश विभाजन को लेकर लिखा गया कमलेश्वरजी का यह लघु उपन्यास एक अलग ही तरह का उपन्यास हैं। इसमें एक मुसलमान इलाके का वर्णन किया गया है जहाँ देश की पराधिनता के कारण जो देश की स्थिति हो गयी है, उसके बारे में कुछ भी जानकारी उन्हें नहीं हैं। लेकिन जैसे ही उन्हें इस बात की जानकारी हो जाती है, वैसेही इतना तनाव पैदा हो जाता है कि लोग एक दूसरे से कतराने लगते हैं। बँटवारे की भीषणता, खून-खराबा आदि को यथार्थ रूप में चित्रण किया गया है। इस इलाके के लोग बँटवारे के कारण एक दूसरे के दुश्मन बन गये हैं। यह सिर्फ चार पात्रों की दुख-दर्द भरी कहानी न होकर पूरे समाज की कहानी बन जाती है। पूरे देश में जैसे आजादी के पहले साम्प्रदायिक की आग भड़कायी गयी थी, वैसे ही इस इलाके में भी भड़कायी गयी। तब इफ्तिकार ताँगेवाला सवारी न मिलने के कारण स्टेशनपर निठल्ला बैठा रहने लगा। वह अत्यंत क्रोधित होकर कहता भी है -

``स्टेशन का रास्ता सुनसान है न, इसलिए उन्हें डर लगता है। अरे पूछो, यहीं पैदा हुआ-----------यही रह-बसा, अब लोग मन-ही-मन मुझ पर शक करते हैं। सम में नहीं आता यह हो क्या रहा है ?``[3]

अपने पर शक किये जाने के कारण इफ्तिकार अत्यंत ही व्यथित हो जाता है। इस इलाके के लोग पहले रोजी-रोटी के लिए संघर्षरत रहते थे। परंतु साम्प्रदायिकता ने उनमें इतना विष भर दिया कि वे एक-दूसरे से कटकर रहने लगे। चाहे सलमा और सतार हो या बच्चन और नसिबन हो इन सभी की कुरबानियाँ, रतन और मकसुद की गद्दारी को सुधार नहीं सकी।

आजादी के बाद पाकिस्तानी बन जाने के बाद हमें खुशियाँ ही खुशियाँ मिलेगी यह सोचकर इलाका छोड़कर चले गये मुसलमानों को वास्तविकता के आभास ने झटका लगा दिया। यह पीढ़ी एक तरह से बेहोश थी। और इसी अवस्था में भटक गयी। इसी प्रकार की भटकन फिर नयी पीढ़ी को विरासत के रूप में मिली है। इसी वजह से भटकती पीढ़ी जब फिर एक बार भटकती हुई उसी इलाके में वापस आती है। इसी वजह से नसिबन जैसे वहीं पर रहनेवाले लोग अत्यंत खुश हो जाते हैं। नसिबन तो रो पड़ती है इस उपन्यास में आत्मविश्वास कर्तव्यपरायणता, आस्था आदि का महान संदेश दिया गया है। भाषा की दृष्टि से भी यह उपन्यास अत्यंत संवेदनशील एवं सांकेतिक सफल उपन्यास बन गया है।

इस प्रकार यह एक सफल उपन्यास बन गया है।

तीसरा आदमी -

कमलेश्वरजी ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विभिन्न आयामों को अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है। इन सम्बन्धों में बिखराव कैसे आता गया यह बताते हुए कमलेश्वर ने इस उपन्यास की रचना की है। यह लघु उपन्यास बिना किसी बनावट के सहज शैली में लिखा गया है। डा.जयश्री बरहाटे ने इस उपन्यास के सन्दर्भ में लिखा हैं -

``यह उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति चेतना के बदलते हुए स्वरूप का मनोवैज्ञानिक अंकन करता है।``[5]

डा.जयश्रीजी का यह मत उपन्यास पढ़ने के बाद अत्यंत सार्थक साबित होता है।

ऐसा कहा जाता है कि, शक की दीवार जब मनुष्य के भीतर खड़ी हो जाती है तो वह मनुष्य किसी भी तरह की हारकत करने के लिए तैयार हो जाता है। इसी के कारण मनुष्य कभी-कभी, पशु बन जाता है। पति-पत्नी सम्बन्धों में तो यह शक जब बीच में आता है, सम्बन्ध बिघड़ते जाते हैं। एक कस्बे का आदमी जब शहर में रहने चला आता है तो उसकी क्या स्थिति हो जाती है, इस बात का चित्रण करते हुए कमलेश्वरजी के 'तीसरा आदमी' इस उपन्यास में 'मैं' शैली का प्रयोग करते है। संक्षिप्त कलेवर होते हुए भी यह उपन्यास एक अलग ही तरह का उपन्यास है। दिल्ली में नौकरी करने लगा नरेश अपनी शादी के बाद पत्नी चित्रा को दिल्ली ले आता है और जगह की कमी के कारण सुमन्त के कमरे में रहने लगता है। यहीं से धीरे-धीरे सुमंत का आस्तित्व उन दोनों के बीच मंडराने लगता है। चित्रा बच्चों की टयुशन लेकर उनके सहारे जीवन जीती है। क्योंकि 'मैं' संशय का शिकार होकर घूटन, छटपटाहट में व्यस्त रहता है। इसी कारण उन दोनों का सांसारिक जीवन सुखी नहीं हो पाता। छोटी-छोटी बातें बवंडर का रूप धारण करने लगती है। इस टुटन का जिम्मेदार नरेश को ('मैं को) मानते हुए डा.गोपालराय लिखते है

``इस टुटन की ज्यादा जिम्मेदारी नरेश पर है क्योंकि उसके पास न तो स्थिति पर काबु पा सकने का दमखम है और न तीसरे आदमी को सहजरूप में स्विकार करने की स्वस्थ दृष्टि। वह चित्रा से भागने लगता है---------- अपने मन के सन्देहों के कारण पून: चित्रा की ओर लौटता है --------अपनी भावूक कमजोरी के कारण।``[6]

जैसे ही नरेश के मन में यह शक का कीड़ा रेंगने लगता है, उसकी स्थिति एक निरंतर लड़ते रहनेवाले व्यक्ति के समान हो जाती है। वह कहता है -

``रातों में-----जब मैं चित्रा को अपनी बाँहों में लेता तो एक अजनबी गंध फुटती थी। वह छाया मंडराती हुई कहीं से आती थी और मुझसे पहले उसकी बाँहों को पकड़ लेती थी, -------- जब मैं उसकी बाहों पर हाथ रखता तो वहाँ दो हाथ पहले से मौजुद होते थे। वह छाया मुझे चित्रा के पास पहुँचने से रोकती थी। -----चित्रा की आँखों में जब मैं झाँकता था तो वहाँ चार आँखे झाकती होती थीं,-----चार, बाँहे उसे कस रही होती थी, चार होंठ उसे प्यार कर

रहे होते थें--------।``[7] उसकी स्थिति बिल्कुल पागलों की तरह हो जाती है। इस उपन्यास का उद्देश्य बताते हुए डा.पारूकांत देसाई ने लिखा है -

``प्रस्तुत उपन्यास में लेखक का उद्देश्य इसी मध्यवर्गीय मनोदशा और संस्कार-जो आर्थिक अधिक है - को गहराई से एक हलकी तिक्तता के साथ उभारने का रहा है।``[8]

अंत तक आते-आते स्थिति इतनी बदतर हो जाती है कि, स्वंय नरेश ही जैसे `तीसरा आदमी` बन जाता है। नरेश का यह शक सिर्फ उन दोनों को ही नहीं तो सुमंत को भी निगल डालता है और सुमंत आत्महत्या कर लेता है।

काली आँधी -

एक लंबी अवधी के पश्चात् कमलेश्वरजी का यह उपन्यास प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने दिखाने की कोशिश की है कि, स्वाधिनता से पहले भारतीय स्त्री की स्थिति एक अलग ही प्रकार की थी। उसके जिम्मे कुछ विशिष्ठ काम थे जैसे, पति की सेवा करना, बच्चों की देखभाल करना। प्राचीन काल से यही स्त्री का रूप माना गया। एकतरह से आजादी से पहले स्त्री भी गुलाम थी। लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् स्थिति परिवर्तित हुई। स्त्री घर से बाहर निकलकर सामाजिक क्षेत्र में और फिर राजनीतिक क्षेत्र में आयी। इस बात के लिए समाज तैयार न होने कारण समाज में स्त्री की उपेक्षा हुई। फिर भी विपरित परिस्थितियों का सामना करते हुए वह अपना स्थान समाज में बना लेती है। आधुनिक काल की इसी नारी का अंकन कमलेश्वर ने `काली आँधी` में किया है।

इस उपन्यास की नायिका मालती राजनीति में प्रवेश करती है। राजनीति में भी आजकल भ्रष्ट वातावरण कैसे फैल गया है, इस बात का चित्रण उपन्यास में कमलेश्वर ने मालती के माध्यम से किया है। यह उपन्यास व्यक्तिगत और सामाजिक दो स्तरों पर एकसाथ चलता है। एक ओर यह एक असफल दाम्पत्य की कहानी है, तो दूसरी ओर सम्पूर्ण देश में व्याप्त, छल-कपट और षडयंत्र की करूण कहानी है। कमलेश्वर ने मालती और जग्गीबाबू के माध्यम से पूरे देश के प्रश्नों और स्थितियों के द्वारा सम्पूर्ण युग के प्रश्नों और स्थितियों पर प्रकाश डाला है। मालती पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक

दृष्टि से पिछडे हुए वर्ग का शोषण करती है ; उन्हें बहकाती है। मालती पहले पति के प्रोत्साहन से ही राजनीति में उतरी लेकिन जैसे ही उसे सफलता मिलती गयी, वैसे ही राजनीति उसपर हावी होती चली गयी। जैसे-जैसे वह राजनीति की एक-एक सीढियाँ चढती गयी वैसे-वैसे परिवार के प्रति होनेवाले आपने कर्तव्य को भूलती चली गयी और फिर उनका परिवार बिखर गया। उसका पति अपनी बेटी लिली को पंचमठी में होस्टल में रखवा देता है और स्वंय एक होटल में मैनेजर बन जाता है। जग्गीबाबू को राजनीति में कोई रूचि नहीं है। जब मालती एकबार उसी होटल में आती है, तो वह वहाँ पर अपने पति का उपयोग चुनाव जितने के लिए एक मोहरे के रूप में करती है। और चुनाव जीत जाती है। डा.अमर जयसवाल ने लिखा है -

``वर्तमान युग के घृणित राजनैतिक वातावरण और अपमानजनक स्थिति का अत्यंत प्रभावी चित्रण इसमें हुआ है।``[9]

यह बात तो एकदम सच साबित होती है। कृष्णकुमार विस्सा ने लिखा है -

``कमलेश्वर ने अपने उपन्यास `काली आँधी` में आधुनिक नारी का राजनीतिक क्षेत्र में योगदान व उसकी सफलता का चित्रण अंकित किया है। उनकी अपने लिए निर्धारित सनातन मूल्यों से घोर टक्कर होती है। उन्हें घर और बाहर के संघर्षों का सामना करना पडता है।``[10]

लगभग इसी प्रकार का विचार अन्य सभी आलोचकों ने भी व्यक्त किया है। भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो इसकी भाषा अत्यंत तिखी और व्यंग्यात्मक है। भारत की राजनीति पर करारा व्यंग्य इसमें किया गया है। इसमें प्रतिकात्मकता और सांकेतिकता प्रयोग किया गया है। इसप्रकार यह उपन्यास कमलेश्वर का सबसे सफल उपन्यास है।

आगामी अतीत -

सन् 1976 में प्रकाशित कमलेश्वर का यह लघु उपन्यास है। ऐसा कहा जाता है कि आजतक वेश्या जीवन से संबंधित जितने भी सारे उपन्यास लिखे गये है उसमें से अधिकतर उपन्यासकारों ने प्रेमचंद के

`सेवासदन' का अनुसरण किया है। परंतु कमलेश्वर के `आगामी अतीत' में इसप्रकार का अनुसरण नहीं है। इस उपन्यास का नायक कमल बोस एक गरीब माँ का इकलौता बेटा है, तो वजीफा दिलाकर अपने बेटे को डाक्टरी पढ़ाती है। वह परीक्षा से पहले पढ़ाई के लिए अपने घर दार्जिलिंग आता है जहाँ `धनवंतरी औषधालय' के वैद्य दिलबहादूर थापा की पुत्री चन्दा से उसका परिचय होता है जो प्यार में बदल जाता है। डाक्टरी के परीक्षा के बाद वह लौट नहीं पाता क्योंकि चंद्रमोहन सेन उसे फर्स्ट आने पर अपनी सुपुत्री निरूपमा के लिए खरीद लेता है। निरूपमा से उसकी पटती नहीं है। निरूपमा मात्रा से अधिक नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करती है। चन्दा विवश होकर एक अधेड़ लंगडे हरकारे से ब्याही जाती है। उसे एक पुत्री होती है जिसका नाम चांदणी रखा जाता है। चन्दा के पति के मृत्यु के बाद चन्दा कुछ सालों में पागलपन की अवस्था में मर जाती है। इसके पच्चीस साल बाद पागल खाने का एक खूनी ढोंगी पागल चाँदनी पर बलात्कार करता है और वह वेश्या का जीवन बिताने पर मजबुर हो जाती है।

अचानक जब कमल से उसकी मुलाकात हो जाती है। कमल उसे वापस लाने की कोशिश करता है परंतु वह सफल नहीं हो पाता। उसे सभ्य समाज में रहने की रूचि नहीं है। चाँदनी को उसकी माँ के बारे में भी पता चल जाता है तो वह कमल को एक तिरस्कार की नजर से देखती है। उसके साथ जाने के लिए फिर भी तैयार नहीं होती। इस उपन्यास के संदर्भ में डा.अमर जायसवाल ने लिखा है

``कमलेश्वर ने `आगामी अतीत' उपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की जिंदगी को अत्यंत सूक्ष्मता एंव स्वाभाविकता से अंकित किया है। उसके जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है ?''[11]

यह अत्यंत सार्थक प्रतित होता है।

कमलेश्वर ने जानबुझकर स्थान-पा परिवेश की अत्यंत उपेक्षा की है। कुछ ऐसे स्थानों का जिक्र किया है, जिनका उस प्रदेश के साथ कोई ताल्लुख ही नहीं है। इसमें लेखक ने रोमाण्टिकता को रोमाण्टिकता से तोडने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता को दिखाते हुए डा.पारूकांत देसाई ने लिखा है -

''संक्षेप में प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने बखूबी गुजरे हुए अतीत को शनै: शनै: पास आते हुए देखाया है और साथ ही कुशलतापूर्वक यह भी संकेतित किया है कि यह इन सभी का अगामी अतीत हो सकता है, जो अपनी जमीन से कटकर के आसमान में चुगना चाहते है।''[12]

इस उपन्यास में चाँदनी को एक प्रतीक के रूप में इस्तमाल किया गया है । जो समाजद्वारा उपेक्षित और कुत्सित दृष्टि से देखी जानेवाली वेश्या का निरूपन किया गया है। चाँदनी जैसी कई लड़कियाँ जो परिस्थितियों का शिकार बनी है, उनका चित्रण चाँदनी के माध्यम से किया गया है। इसप्रकार हम यह कह सकते है कि, आधुनिक जीवन की गतिशीलता, परिवर्तनशीलता, नवोन्मेष की भावना, मध्यवर्गीय जीवन के विविध पक्षों, आधुनिक युगबोध एवं विराट मानवीय चेतना का कमलेश्वर ने बड़ी कुशलता से चित्रण किया है। जिस मानवीय जीवन का चित्रण उन्होंने दिया है वह पाठकों को सदा ही अपना अनुभूत हुआ।

वही बात -

कमलेश्वर के द्वारा लिखा गया `वही बात` लघु उपन्यास 1980 में लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास तक आते-आते कमलेश्वर जी का साहित्यकार सिर्फ फिल्मी कथानकों की ओर ध्यान देनेवाला साहित्यकार बन गया था। और पाठकों की उनसे अपेक्षाएँ भी गौण होती चली गयी थीं। इस उपन्यास में भी इसी बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते है। इस उपन्यास को पढ़कर तो यह महसूस होता है कि, सिर्फ फिल्माने के लिए ही कमलेश्वर ने इस उपन्यास की रचना की है। चन्द पंक्तियों में जिसका कथानक बताया जा सकता है, ऐसे कथानक को सौ पन्नों तक खिंचा गया है।

प्रशांत को जब अपनी पत्नी के प्यार का पता चलता है तो वह उसे नकुल को लिए छोड़कर चला जाता है। इन तीनों के अंतर्द्वन्द्व का अत्यंत सफलतापूर्वक चित्रण कमलेश्वर ने किया है।

सुबह-दोपहर-शाम -

कमलेश्वरजी के 'सुबह-दोपहर-शाम' लघु उपन्यास में यद्यपि युगीन चित्रण, भावनात्मक द्वंद्व चित्रण अथवा मूल्य संघर्ष का चित्रण नहीं किया गया है। फिर भी भाषा की स्वाभाविकता, सहजता, निखार उसकी ओर पाठकों को खिंचने में सफल हुआ है। इस उपन्यास में दो महत्त्वपूर्ण बाते अत्यंत आश्चर्यकारक रूप में चित्रित हुई है। एक तो इस उपन्यास की बड़ी दादी जो अद्‌भुत है दूसरी रेल जो दो विचारधाराओं के टकराव के लिए माध्यम के रूप में उपयोग में लायी गयी है। सन 57 की घटना का बदला लेने की समस्या भी बड़ी दादी से जुड़ी है। जसवंत दो रूपये मासिक वेतन पर अँग्रेजों की रेल चलाने जाता है जिससे दादी को आश्चर्य होता है। वह उसे गद्दार मानती है। दादी के समर्थक सिर्फ जसवंत की माँ और पुत्री है। अन्य सभी सदस्य अँग्रेज भक्त है। डा.विवेकी राय ने लिखा है - ''इस प्रकार फिल्मी पटकथा के रूप में समस्या को घटनाओं के भीतर ऐसे तराशा गया है कि वह अन्त में अनुकूल विस्फोटक चमत्कार के साथ हल होती झलक जाए। स्पष्ट है कि इस प्रयास में कहानी के भीतरवाली वह क्षमता जो पाठकों को सहजता के साथ छु ले, नष्ठ हो जाती है।''[14]

डा. विवेकी राय के अनुसार इसे जान बुझकर फिल्माने के अंदाज में ही लिखा गया है। उपन्यास की वह कल्पना - जहाँ दादी परिवार के सभी सदस्यों को जंगल में इकट्ठा करती है, वह वनदेवी का रूप दिखा देती है और उन्हें घेरकर जंगली चीते-भालु बैठे है वही पर उनकी मृत्यु हो जाती है। एकदम ही वास्तविकता से कथानक को दूर ले जाती है। कथानक के उत्तरार्ध में शांता और उसका पति प्रविण के माध्यम से आगे बढ़ने वाली क्रान्ति कथा रोमांचक होने के बावजूद अपना प्रभाव नहीं जमा पाती। कथा के अन्त में चाहे दादी की प्रतिज्ञा पूरी होती है। लेकिन वहाँ पर भी शांता के प्रेमी की कहानी बीच में आती है। जो अपना पूरा प्रभाव नहीं जमा पाती। एक अकेली दादी का व्यक्तित्व ही गरिमामयी व्यक्तित्व के रूप में उभरकर आता है। संक्षेप में हम कह सकते है कि आजादी के पूर्व के भारतीय गाँव के संघर्ष पूर्ण जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। लेखक ने तत्कालीन कस्बाई मानसिकता को उजागर करने का पूरा प्रयास किया है।

रेगिस्तान -

सन् 1988 ई.में प्रकाशित कमलेश्वर का यह लघु उपन्यास पुराने आदर्श और उनके टुटन की कहानी है। इस उपन्यास का नायक विश्वनाथ सन् 1930 ई. से लेकर जीवन के अंत तक दक्षिण में हिंदी का प्रचार करता है। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देखता है कि न कहीं हिंदी है और न वे राष्ट्रीय मुल्य जिनके लिए वह त्याग और तपस्या करता आया है। उसका अपना संतुलन ही खो जाता है। पहले तो वह टुट जाता है। वह आत्महत्या करना चाहता है। लेकिन फिर एक आशा उसके ह्रदय में संचरित होती है, वह कहता है -

``नहीं, वह हारेगा नहीं - जहाँ से जड़े उखाड़ दी गयी है। वही जड़ों को फिर रोपेगा। हिंदी मंदिर बनायेगा। जरूरत हुई तो छोटा-मोटा आन्दोलन चलायेगा।``[15]

लेकिन अंत तक जब वह असफल हो जाता है तो वह एकतरह से पागल बन जाता है। जो यह सोचा करता था कि विदेशी भाषा को नहीं चलने देगा वही जब मुर्च्छा से जागता है तो ``अ-आ-अलिफ-------`` कहने लगता है और फिर से बेहोश हो जाता है। इस प्रकार यह उपन्यास पूरी तरह विश्वनाथ के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है।

समुद्र में खोया हुआ आदमी -

कमलेश्वर का अन्तिम लघु उपन्यास `समुद्र' में खोया हुआ आदमी' मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है। शहरी जीवन का बिखराव, टुटन को इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया गया है। इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र संघर्षी है। इस उपन्यास का परिवार सिर्फ दिल्ली का ही नहीं बल्कि भारत के किसी भी शहर का हो सकता है।एक सिन्धी ट्रान्सपोर्ट कंपनी में क्लर्की का काम करने वाले शामलालबाबू, उनकी पुत्री तारा तथा पुत्र वीरन की कहानी है। ट्रान्सपोर्ट कंपनी से निकाले जाने के कारण शामलालबाबू हरवंश के कपडों पर फुल काढ़ने की दुकान पर काम करने लगता है। तारा भी जब उसी दुकान में काम करने लगती है तो हरबंस का शामलाल के घर आना जाना बढ़ जाता है जो शामलाल को बिल्कुल पसन्द नहीं है। परन्तु वे विवश है उनका लड़का विरन भी समुद्री जहाज पर नौकरी पा लेता है। वह जब तक पैसे घर भेजता है तब तक शामलाल का प्रभाव घर पर बना

रहता है। तारा गर्भवती हो जाती है अपनी पड़ोसिन रश्मी से मुक्ति का इलाज पूछती है। सामाजिक संदर्भों में नैतिक मान्यताएँ बदल जाने के कारण यह बात किसी को भी गैर नहीं लगती। एक दिन शामलाल को इस बात का पता चलता है कि उनका बेटा वीरन समुन्दर में खो गया है। वीरेन्द्र के समुन्दर में खो जाने से पुरा परिवार ही मानो समुद्र में खो जाता है। डा.अमर जायसवाल ने लिखा है -

``इस लघु उपन्यास में शहरी निम्न वर्गीय परिवार के विघटन की कथा है। वह तमाम समाज के बदलते व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप में इसमें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।``[16]

इसमें न कोई आदर्श है और न कोई समझौतावादी दृष्टिकोण। इसमें लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि, आर्थिक दबाव पुराणे मुल्यों को तोड़ रहा है और निम्न मध्यवर्ग का उसे जिवीत रखने का प्रयत्न व्यर्थ है। उसके भविष्य का प्रतिकूल परिस्थितियों के समुद्र में खोना आवश्य भावी है। इस उपन्यास में सांकेतिकता, रूपकधार्मिकता, प्रतिकात्मकता आदि गुण मिलते हैं।

इस प्रकार हम यह देखते है कि कमलेश्वरजी का उपन्यास साहित्य अत्यंत समृद्ध है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि कमलेश्वर मुलत: एक कहानीकार है। उन्होंने जितने भी सारे उपन्यास लिखे है ते सभी लघु उपन्यास की कोटि में ही आनेवाले उपन्यास है। उन्होंने अपनी उपन्यासों की कथाओं को कहानीयों की संवेदनाओं से चुना है। और उसीको विस्तृत करने का प्रयास किया है। कथारचना की मौलिक दृष्टि उनमें आवश्य रूप से पायी जाती है। उनके आरंभिक उपन्यास तो मौलिकता की दृष्टि से अत्यंत सफल उपन्यास है। परंतु जैसे ही वे फिल्मों की कथाएँ लिखने लगे वैसे उनके उपन्यास भी उससे प्रभावित दिखाई देने लगे। कुछ लघु उपन्यास तो सिर्फ कमलेश्वर जी ने फिल्मों के लिए ही लिखे है, ऐसा प्रतित होता है। यही वजह है कि उपन्यास के क्षेत्र में कमलेश्वर एक सफल उपन्यासकार के रूप में नहीं उभरे। उनके उपन्यासों के कथानक की दृष्टि से देखा जाय तो उनके उपन्यासों के संवाद, भाषाशैली वातावरण, पात्र आदि सभी दृष्टि से उनके उपन्यास सफल हुए है। उनके उपन्यासों में उनकी अपनी भुमि मैनपूरी तो साफ झलकी ही है, परन्तु आजादी के पहले और बाद की स्थिति का यथार्थ अंकन किया गया है। जो स्वंय उन्होंने भुगता है। अर्थात एक संवेदनशील साहित्यकार होने के नाते अपने उपन्यासों के कथानक में विविधता लाने का प्रयास कमलेश्वर ने किया है जिसमें वे सफल दिखाई देते है।

सन्दर्भ [redacted] सूची

1. डा.अमर जायसवाल - ``हिंदी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार`` - पृ.41।

2. डा.पारूकांत देसाई - ``साठोत्तरी हिंदी उपन्यास`` - पृ.138।

3. कमलेश्वर - ``लौटे हुए मुसाफिर` - पृ.84।

4. डा.जयश्री बरहाटे - ``हिंदी उपन्यास : सातवाँ दशक`` - पृ.56।

5. सं.डा.गोपालराय - ``हिंदी साहित्याशब्दकोश``-1976 - पृ.109।

6. कमलेश्वर - ``तीसरा आदमी`` - पृ.82-83।

7. डा.पारूकांत देसाई - ``साठोत्तरी हिंदी उपन्यास`` - पृ.139।

8. डा.अमर जायसवाल - ``हिंदी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार`` - पृ.47।

9. कृष्णकुमार बिस्सा - ``साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना`` - पृ.54।

10. डा.अमर जायसवाल - ``हिंदी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार`` - पृ.49-50।

11. डा.पारूकांत देसाई - ``साठोत्तरी हिंदी उपन्यास`` - पृ.142।

12. डा.विवेकी राय - ``आधुनिक उपन्यास विविध आयाम`` - पृ.113।

13. कमलेश्वर - `रेगिस्तान` - पृ.62।

14. डा.अमर जायसवाल - ``हिंदी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार`` - पृ.55।